1

माध्यमिक पाठ्यक्रम

लोककला

सिद्धांत

244

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)
ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर- 62, नोएडा-201309 (उ.प्र.)
वेवसाइट: www.nios.ac.in, टॉल फ्री नंबर 18001809393

सलाहकार समिति

प्रो. सरोज शर्मा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

डॉ. राजीव कुमार सिंह
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

डॉ. संध्या कुमार
उप निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

पाठ्यक्रम समिति

डॉ. महेंद्र भानावत
निदेशक (सेवानिवृत्त)
भारतीय लोककला मंडल
352, श्री कृष्णपुरा, उदयपुर, राजस्थान

प्रो. आर. एन. पांडा
प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय
भुवनेश्वर, ओडिशा

प्रो. राघवन पय्यानाद
विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
लोक साहित्य अध्ययन विभाग
कालीकट विश्वविद्यालय, केरल

श्री मुश्ताक ख़ान
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)
शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली

डॉ. कृष्णा जगनू
लोककला के लेखक और विशेषज्ञ,
विनायक नगर, उदयपुर, राजस्थान

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
अनुसंधान अधिकारी (सेवानिवृत्त)
लोक साहित्य अध्ययन, इंदिरा गाँधी
राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली

श्री वसंत निर्गुणी
अधिकारी (सेवानिवृत्त)
आदिवासी लोककला परिषद्
भोपाल, (म.प्र.)

श्री रबिन्द्रनाथ साहू
कला शिक्षक
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
शिशुपालगढ़, भुवनेश्वर, ओडिशा

सुश्री अनीता देवराज
प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
डीएवी पब्लिक स्कूल
बहादुरगढ़, हरियाणा

डॉ. सर्बदमन मिश्र
सह-आचार्य
गवर्नमेंट कॉलेज, अजमेर
राजस्थान

श्री सतीश शर्मा
निदेशक, शिल्प भारती
ललित कला एवं शिल्प संस्थान
साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली

डॉ. एम. के. पाल
परियोजना निदेशक (सेवानिवृत्त)
कला, शिल्प और सामाजिक
सांस्कृतिक अध्ययन, नई दिल्ली

श्री बिभास भट्टाचार्य
फ्रीलांस कला समीक्षक
बगुइयाटी, कलकता

सुश्री अल्पना पारीख
स्वतंत्र कलाकार
सेक्टर 21, नोएडा

श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी एवं
पाठ्यक्रम समन्वयक कला प्रदर्शन शिक्षा
रा.मु.वि.सं., नोएडा

पाठ लेखक

श्री मुश्ताक ख़ान
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)
शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली

श्री सतीश शर्मा
निदेशक, शिल्प भारती
ललित कला एवं शिल्प संस्थान
साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली

प्रो. राघवन पय्यानाद
विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
लोक साहित्य अध्ययन विभाग
उकालीकट विश्वविद्यालय, केरल

श्री बिभास भट्टाचार्य
फ्रीलांस कला समीक्षक
बगुइयाटी, कोलकाता

डॉ. कृष्णा जगनू
लोककला के लेखक
और विशेषज्ञ, विनायक नगर
उदयपुर, राजस्थान

डॉ. महेंद्र भानावत
निदेशक (सेवानिवृत्त)
भारतीय लोककला मंडल
352, श्री कृष्णपुरा
उदयपुर, राजस्थान

श्री वसंत निर्गुणी
अधिकारी (सेवानिवृत्त)
आदिवासी लोककला परिषद्
भोपाल, (म.प्र.)

श्रीमती बी. एम. चौधरी
अतिथि प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
ललित कला महाविद्यालय
नई दिल्ली

संपादक

प्रो. के. एम. चौधरी
विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
ललित कला महाविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए. के. सिंह
निदेशक, (सेवानिवृत्त)
भारत कला भवन, बनारस हिन्दू
विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

श्री मुश्ताक ख़ान
उपनिदेशक (सेवानिवृत्त)
शिल्प संग्रहालय,नई दिल्ली

डॉ. बालकृष्ण राय
उप निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

अनुवादक

डॉ. रिचा जैन
कलाा शिक्षाविद्
नई दिल्ली

श्रीमती बी. एम. चौधरी
अतिथि प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
ललित कला महाविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. कनक लता सिंह
अनुसंधान अधिकारी
ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

टाइप सेटिंग

श्री कृष्णा ग्राफिक्स
दिल्ली

आपके साथ दो शब्द

प्रिय शिक्षार्थी,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा निर्मित लोककला के माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। हमें उम्मीद है कि आप शिक्षा की मुक्त और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सीखने का आनंद लेंगे। लोककला में पारंपरिक जीवन-शैली, विविध संस्कृतियों और विभिन्न सामाजिक समूहों के द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को दर्शाया गया है। कला एक दिलचस्प माध्यम है जो अनेक चित्रों और रंगों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर देता है। यह पाठ्यक्रम लोक और जनजातीय कला के माध्यम से धन अर्जित करने के साथ-साथ कला एवं कौशल की आंतरिक आवश्यकता को पूर्ण करेगा। यह पाठ्यक्रम लोक और जनजातीय कला में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा और आपको अपने व्यक्तित्व और बुनियादी ज्ञान को विकसित करने में मदद करेगा। पाठ्यक्रम में लोककला के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू शामिल हैं तथा मूल्यांकन के क्रमशः 40 अंक और 60 अंक होंगे।

यह पाठ्यक्रम लोक और जनजातीय कला, माध्यम, तकनीक और शैलियों के परिचय पर जोर देते हुए लोक और जनजातीय क्षेत्र के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं का पर्याप्त ज्ञान प्रदान करेगा। आप दीवार-चित्रण, धरा-चित्रण एवं चित्रण के अन्य माध्यमों से भी परिचित होंगे। पाठ्यक्रम के लिए प्रायोगिक कक्षाएँ आपके अध्ययन केंद्र पर आयोजित की जाएँगी।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए मूक्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से पाठ्यक्रमों को प्रस्तुत करने में खुशी हो रही है। वीडियो व्याख्यान और चर्चा मंचों सहित माध्यमिक पाठ्यक्रमों के प्रमुख विषयों को मूक्स के रूप में विकसित किया गया है। गुणवत्तापूर्ण वीडियो देखने के लिए आपको www.swayam.gov.in पर पंजीकरण और नामांकन करना होगा। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ई-विद्या चैनल 10 और 12 के माध्यम से अपने शैक्षिक कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण करता है।

हमें उम्मीद है कि आप हमारे साथ लोककला सीखने का आनंद लेंगे। इस स्व-अध्ययन सामग्री के अंत में संलग्न फीडबैक फार्म में बेझिझक अपने सुझाव दें।

शुभकामनाओं सहित

पाठ्यक्रम समिति

अध्ययन सामग्री का उपयोग कैसे करें

आपने स्व-शिक्षार्थी बनने की चुनौती स्वीकार की है, इसके लिए बहुत-बहुत बधाई! एनआईओएस हर कदम पर आपके साथ है और आपको ध्यान में रखते हुए विशेषज्ञों की एक टीम की मदद से लोककला की सामग्री विकसित की गई है। इसमें स्व-अध्ययन प्रणाली के प्रारूप का पालन किया गया है। यदि आप दिए गए निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप इस सामग्री से सर्वोतम लाभ प्राप्त करने में सक्षम होंगे। सामग्री में प्रयुक्त प्रासंगिक चिह्न आपका मार्गदर्शन करेंगे। आपकी सुविधा के लिए इन चिह्नों के बारे में नीचे बताया जा रहा है।

शीर्षक: यह भीतर की सामग्री का स्पष्ट संकेत देगा। इसे जरूर पढ़ें।

परिचय: यह आपको पाठ से परिचित कराएगा।

उद्देश्य: ये ऐसे कथन हैं जो बताते हैं कि पाठ के माध्यम से आपसे क्या सीखने की अपेक्षा की जाती है।

टिप्पणियाँ: महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखने या टिप्पणियाँ लिखने के लिए प्रत्येक पृष्ठ पर हाशिए पर दी गई खाली जगह होती है।

पाठगत प्रश्न : अति लघु उत्तरीय पाठगत प्रश्न प्रत्येक खण्ड के बाद पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर पाठ के अंत में दिये जाते हैं। ये आपकी प्रगति की जाँच करने में आपकी सहायता करेंगे। उनका समाधान करें। यह परीक्षण आपको यह तय करने में मदद करेगा कि आगे बढ़ना है या वापस जाना है और फिर से सीखना है।

क्रियाकलाप : यह सीखने का एक तरीका है। सीखने वाला खुद को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त कर सकता है।

आपने क्या सीखा : यह पाठ के मुख्य बिंदुओं का सारांश है। यह पुनरावृत्ति में मदद करेगा। इसमें अपने बिंदु भी जोड़ने के लिए आपका स्वागत है।

सीखने के प्रतिफल : आपको यह जाँचने में मदद करेंगे कि आपने पाठ के माध्यम से अपेक्षित ज्ञान को ग्रहण कर लिया है।

पाठांत प्रश्न : इनमें लंबे और छोटे प्रश्न होते हैं जो पूरे विषय की स्पष्ट समझ के लिए अभ्यास करने का अवसर प्रदान करते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर : इससे आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि आपने प्रश्नों के कितने सही उत्तर दिए हैं।

विषय-सूची

मॉड्यूल 1: लोक व जनजातीय कला की प्रस्तावना

1. लोक व जनजातीय कला का परिचय 1
2. लोक व जनजातीय कला के रूप 11
3. कलाकारों और विद्वानों का योगदान 25

मॉड्यूल 2 : माध्यम, तकनीक और शैली

4. पारंपरिक और समकालीन विधि और सामग्री 47
5. लोककला के प्रतीक एवं अभिप्राय 58
6. लोक व जनजातीय कला का महत्व और उपयोगिता 72
7. संभावना और अवसर 83
    - लोककला पाठ्यक्रम 97
    - प्रश्नपत्र का प्रारूप 101
    - नमूना प्रश्नपत्र 103
    - अंक योजना 106

शिक्षक अंकित मूल्यांकन कार्य (टीएमए) के लिए निर्धारित पाठ

पाठ 5 और पाठ 7

मॉड्यूल 1: लोक व जनजातीय कला की प्रस्तावना

1. लोक व जनजातीय कला का परिचय
2. लोक व जनजातीय कला के रूप
3. कलाकारों और विद्वानों का योगदान